भारत के बेटे

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00 1/2

राम - रहीम

लेखक — बिमल चटर्जी

भारत के बॉर्डर सिक्योरिटी के विशिष्ट ऑफिसर कर्नल राघव (राम के पिता) का अपहरण करने के लिये चीनी सीक्रेट सर्विस के चीफ तुंग ने भारत के ही कुछ कुख्यात बदमाशों का सहारा लिया और उन बदमाशों ने उस समय कर्नल राघव का अपहरण किया, जब राम-रहीम अपने एक दोस्त के घर उसकी बहन की शादी में गये हुए थे। जब राम-रहीम को लौटने पर सारी जानकारी मिली तो वे अपहरणकर्ताओं की खोज में लग गये। अपने ही घर में एक स्थान पर उन्हें एक कुख्यात बदमाश बिरजू का बटुआ मिला और वे उसके सहारे चीफ मुखर्जी की मदद से उसके अड्डे पर जा पहुंचे, फिर बिरजू के उस्ताद भीमा से उन्हें जो जानकारी मिली उसे जानकर वे चौंक उठे। भीमा के अनुसार उसके पिता का अपहरण चीनी जासूसों ने किया था, जिनका अड्डा भारतीय समुद्री सीमा में ही मौजूद एक वीरान पहाड़ के गर्भ में बना हुआ था। राम-रहीम ने एक स्टीमर किराए पर लिया और उसमें बैठ गए। फिर क्या होता है? प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़ें—इससे पूर्व का सम्पूर्ण हाल जानने के लिये "तिरंगे की कसम" पढ़ना न भूलें।

राम ने स्टीमर स्टार्ट किया और स्टीमर समुद्र का सीना चीरता हुआ आगे बढ़ चला।
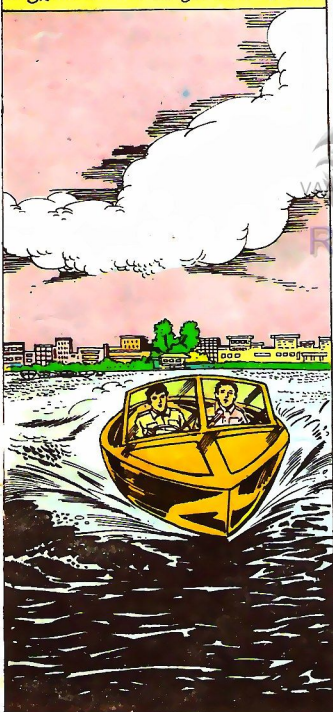
लगभग एक घन्टे की समुद्री यात्रा के पश्चात—
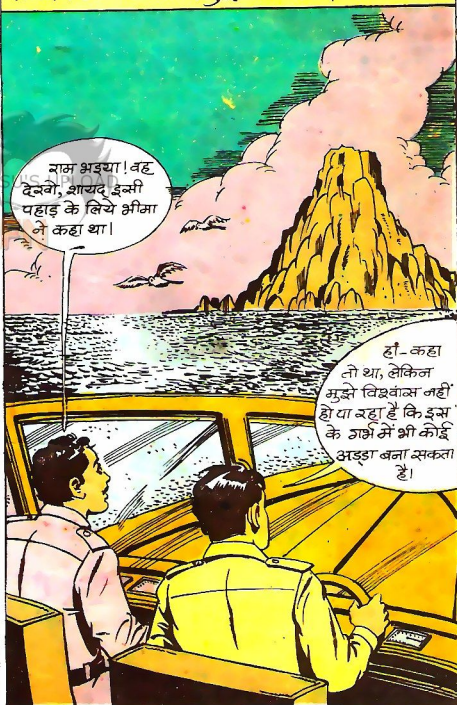
कुछ देर बाद उनका स्टीमर उस पहाड़ की तलहटी से जा लगा, और वे स्टीमर से कूद कर एक चौड़ी समतल चट्टान पर पहुंच गये।
राम भइया! यहाँ आस-पास तो कोई हलचल नहीं दिखाई दे रही।
हमें ऊपर चढ़ना होगा। हो सकता है ऊपर से ही उन्होंने भीतर घुसने का मार्ग बनाया हुआ हो, लेकिन एक मिनट ठहरो। पहले मैं स्टीमर को किसी चट्टान से बांध दूं।
स्टीमर को बांधने के पश्चात दोनों पहाड़ के इर्द-गिर्द पड़ी चट्टानों का सहारा ले-लेकर ऊपर चढ़ने लगे।
अचानक आधी ऊंचाई तय करने के पश्चात रहीम को अपने दाईं ओर कुछ दूरी पर एक-विचित्र-सी वस्तु चमकती दिखाई दी।
अरे, भइया! वह देखो, कोई वस्तु आंखों में चमक डाल रही है।
ओह! कोई शीशा मालूम पड़ता है, लेकिन शीशे का यहां क्या काम? जरा देखो तो...!
इधर पहाड़ के गर्भ में बने चीनी स्टेशन जेबरा के कन्ट्रोल रूम से राम-रहीम की एक-एक गति-विधि पर उस समय से ही निगाह रखी जा रही थी, जब वे स्टीमर से उतर कर पहाड़ की तलहटी पर पहुंचे थे।
उफ! उनकी दृष्टि हमारे एक गुप्त कैमरे पर पड़ गयी है और शायद अब वे उसे नष्ट करने जा रहे हैं।
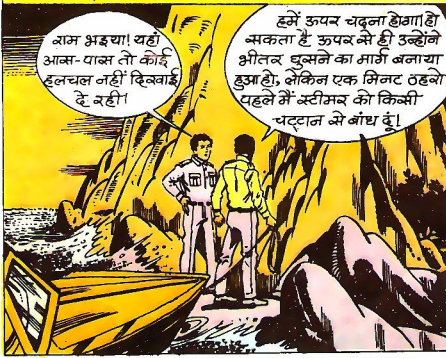
उधर–
यह तो कोई छोटा-सा गुप्त कैमरा मालूम पड़ता है भइया!
क्या–?
फिर राम ने भी उस स्थान पर पहुंचने में देर नहीं लगाई।
वास्तव में, यह तो कैमरा ही है। लगता है, यह कैमरा इस पहाड़ के आस-पास होने वाली हलचल पर नजर रखने के लिये लगाया गया है।
हुं! तो इसका मतलब है, यहां वास्तव में ही चीनी अड्डा कायम है!
बिल्कुल। और साथ ही यह भी समझ लो कि हम दुश्मनों द्वारा देख भी लिये गये हैं।
मारे गये! तब तो वे अब तक हमारी मौत का इंतजाम भी कर चुके होंगे।
हो सकता है, लेकिन इस कैमरे का तो बाजा बजा ही देता हूं।
लेकिन राम भइया! इस कैमरे के टूटने से ही समस्या का अन्त नहीं हो जाता। ऐसे तो न जाने कितने कैमरे इस पहाड़ी पर लगे हुए होंगे।
चिन्ता करने से भी तो समस्या का हल होने वाला नहीं। जो होगा देखा जायेगा। जब सिर ओखली में दे ही दिया है तो अब मूसलों से क्या डरना! चलो ऊपर चलते हैं।
दोनों पुनः ऊपर चढ़ने लगे।
उधर अड्डे में–
जाओ, मि० बांगली को सूचित करो कि दो छोकरे पहाड़ पर चढ़े आ रहे हैं और वे हमारा एक गुप्त कैमरा भी नष्ट कर चुके हैं।
जी, बहुत अच्छा!

परन्तु जब काफी कोशिश करने के बावजूद भी भीमा से सम्पर्क नहीं जुड़ा तो उसने ट्रांसमीटर ऑफ कर दिया।

समझ में नहीं आ रहा चीफ कि उससे सम्पर्क क्यों नहीं जुड़ रहा—ट्रांसमीटर तो वह हमेशा अपने पास ही रखा करता है

मुझे खतरे की बू आ रही है बांगली, यदि राम-रहीम की तरह भारतीय फौज भी यहां पहुंच गई तो गजब हो जायेगा।

मैं कुछ समझा नहीं चीफ!

सुनो बांगली! हो सकता है भीमा अथवा उसके साथियों तक राम-रहीम किसी तरह जा पहुंचे हों और उनसे सबकुछ उगलवा लिया हो। यदि ऐसा हुआ होगा तो समझ लो पुलिस व मिलेट्री भी यहां पहुंचती ही होगी।

ऐसा असम्भव है चीफ! यह तो स्वयं भीमा भी नहीं जानता कि हमारा कोई अड्डा इस पहाड़ी पर है।
यही तो तुममें कमी है बांगली कि तुम सबको मूर्ख समझते हो। यदि उसे न भी मालूम हुआ तो भी तुम्हें हर कार्य के बाद इस पहाड़ की ओर आते देख उसे सन्देह तो हो सकता है।

लेकिन चीफ! यदि ऐसी ही कोई बात होती तो राम-रहीम के साथ इस समय पुलिस फोर्स भी होनी चाहिये थी।
हुम्म! बात तो तुम्हारी ठीक है, लेकिन प्रश्न फिर यही उत्पन्न होता है कि ये दोनों यहां तक कैसे पहुंच गये-?

इस प्रश्न का उत्तर तो अब राम-रहीम ही दे सकते हैं-मेरे विचार से मुझे उनके स्वागत का प्रबन्ध करना चाहिये।
ठीक है। जाओ, लेकिन एक बात और--राम-रहीम के शहर में मौजूद अपने एजेण्ट को भी सूचना प्रेषित कर देना कि वह भीमा को तलाश करे और जल्द-से-जल्द हमें सही जानकारी पहुंचाए। मैं किसी किस्म की लापरवाही कर कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता।
यस चीफ।

इधर राम पहाड़ की चोटी पर रहीम से पहले पहुंचा। मार्ग में दिखाई पड़ने वाले बहुत से गुप्त कैमरों को वे नष्ट करते आये थे।
राम भइया! अब मुझमें और चढ़ने की शक्ति नहीं है।
घबराओ नहीं, लो पकड़ो मेरा हाथ।

रहीम ने कुछ उचककर उसका हाथ थाम लिया और राम ने उसे एक झटके के साथ ऊपर खींच लिया। ऊपर पहुंचते ही रहीम निढाल होकर लम्बा लेट गया।
क्या हुआ-ठीक तो हो न?
ठीक तो हूं, लेकिन थोड़ा दम लेने दो।

कुछ देर आराम करने के पश्चात् राम-रहीम पहाड़ की चोटी पर दुश्मनों के गुप्त मार्ग को तलाश करते रहे, लेकिन उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।
समझ में नहीं आता वे अपने अड्डे के भीतर-बाहर जाते आते कैसे होंगे— यहां तो कहीं भी हमें ऐसा संदिग्ध स्थान नहीं मिला!
कहीं गुप्त मार्ग है अवश्य, लेकिन हो सकता है कि वह मार्ग चोटी पर न होकर पहाड़ की चढ़ाई पर ही कहीं हो!
अभी राम-रहीम आपस में विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि तभी—
हाथ ऊपर उठा लो छोकरो! खबरदार, कोई गलत हरकत करने की कोशिश न करना, वरना कुत्तों की मौत मारे जाओगे!
ओह!
ये कम्बख्त कहां से आ मरे!
चलो सैनिको! इनके रिवाल्वर अपने कब्जे में ले लो।
पलक झपकते ही राम-रहीम के हाथों से रिवाल्वर छिन गये और दोनों बेबस होकर रह गये।
शाबाश! अब चुपचाप अच्छे बच्चों की तरह आगे बढ़ो, लेकिन ध्यान रहे, कोई भी गड़बड़ करने पर गोली तुम्हारे अन्दर होगी और दम बाहर।
फिर बांगली और उसके साथी राम-रहीम को लेकर एक तरफ बढ़ने लगे।
चलो, एक तरह से यह भी अच्छा ही हुआ। अब गुप्त मार्ग का पता अपने आप लग जाएगा!
इसका मतलब है कि गुप्त मार्ग यहीं कहीं है!

कुछ देर तक चट्टानों के मध्य से गुजरने के पश्चात् वे एक चट्टान के निकट पहुंचकर रुके। बांगली ने उस चट्टान में बने छिद्र के भीतर लगे एक बटन को दबाया।
हुम्म! तो यहां है गुप्त मार्ग खोलने का बटन!

बटन के दबाते ही वह चट्टान एक तरफ सरक गयी और नीचे जाने के लिये वहां सीढ़ियां दिखाई देने लगीं।
चलो नीचे उतरो।
मजबूरी है। उतरना तो अब पड़ेगा ही प्यारे चोघड़ भाई!
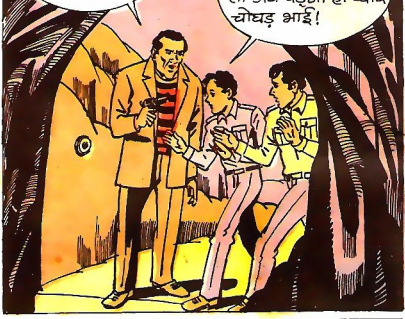
फिर वे खामोशी से सीढ़ियां उतरने लगे।

पहाड़ के गर्भ में पहुंचने पर—
ओह! इतना बड़ा खुफिया अड्डा और हर प्रकार के आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित।
गजब का बनाया है। ऐसे अड्डे की तो सपने में भी उम्मीद नहीं की जा सकती है।

तभी बांगली सैनिकों को सम्बोधित कर बोल उठा—
तुम इन्हें कोठरी नम्बर पांच में पहुंचा दो। मैं कामरेड को खबर करता हूं, लेकिन ध्यान रहे। ये दोनों ही खतरनाक किस्म के लड़के हैं। अतः इनकी निगरानी में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिये।
ठीक है श्रीमान, हम समझ गये।

फिर सैनिक राम-रहीम को लेकर कोठरी नम्बर पांच की ओर चल पड़े और बांगली कामरेड तुंग को खबर देने विपरीत दिशा में चल पड़ा।

शीघ्र ही कर्नल राघव को बंधन मुक्त कर दिया गया।

कर्नल, तुम्हें हमारे इस व्यवहार पर आश्चर्य अवश्य हो रहा होगा।

बिल्कुल नहीं कमीने, मुझे विश्वास है कि तुम्हारे दिमाग में मुझसे फौजी भेद उगलवाने का अन्य कोई नया तरीका आया होगा, आ..ह!

हा..हा...हा वास्तव में तुम समझदार हो कर्नल, परन्तु क्या तुम यह नहीं पूछोगे कि वह नया तरीका आखिर कौनसा और कैसा है?

वह तरीका कैसा भी हो, लेकिन तुम लोग मेरा मुंह नहीं खुलवा सकोगे।

इस बार तुम जरूर मुंह खोलोगे कर्नल! क्योंकि कोई भी बाप अपने बेटे को अपनी आंखों के सामने बेमौत मरते हुए नहीं देख सकता।

क्या मतलब?

मतलब यह कर्नल कि तुम्हारा बेटा राम और उसका दोस्त रहीम इस समय हमारे कब्जे में हैं। तुम्हारी ही खोज करते हुए वे यहां आये थे, लेकिन बेचारे फंस कर रह गये।

नहीं- नहीं— तुम झूठ बोल रहे हो। मैं तुम्हारी बात पर जरा भी विश्वास नहीं कर सकता, मक्कार

अपने लड़के को देखने के पश्चात् तुम्हें मेरी बात पर विश्वास हो जायेगा कर्नल, फिर उनकी जिन्दगी या मौत का फैसला तुम्हारे ही हाथों होगा।

आफिसर! ले चलो इसे कोठरी नम्बर पांच में

सड़ाक

में हमें बता दो, वरना मार-

डैडी!
अंकल!
मेरे बच्चो!
हा..हा...हा... अब तो तुम्हें हमारी बात पर पूरा विश्वास हो गया होगा कर्नल। अब इनकी और तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अपने गुप्त फौजी अड्डों का पता बता दो।
हरगिज नहीं। अपने वतन के ऊपर मैं ये दो तो क्या, सैकड़ों लड़कों को कुर्बान कर सकता हूं।

जल्दबाजी में फैसला करना अच्छा नहीं होता कर्नल! हम तुम्हें सोचने-समझने के लिए पूरे चौबीस घण्टे का समय देंगे। उसके बाद भी यदि तुम्हारा यही फैसला रहा तो इन दोनों की लाशें तुम्हें तोहफे के रूप में दे दी जायेंगी।
आफिसर, ले जाओ इसे और उसी कोठरी में डाल दो।

जब सैनिक कर्नल राघव को लेकर चले गये तो कामरेड तुंग राम-रहीम से सम्बोधित हुआ।
मेरे विचार से तुम दोनों कर्नल की तरह जिद और मूर्खता नहीं करोगे।
क्या चाहते हो हमसे...?

फिलहाल तो सिर्फ इतना जानना चाहता हूं कि तुम्हें यहां के बारे में जानकारी किससे मिली? ध्यान रहे, झूठ बोलने की कोशिश की तो तुम्हारे पिता को, जो समय दिया गया है, उतने समय तक यातनाएं भी सहन करनी पड़ेंगी।
तुम्हारे चूहे एजेण्ट भीमा से..
ओह!
कुछ सोचकर राम ने फिलहाल सच कहना ही उचित समझा।

और वह इस समय हमारे चीफ की कस्टडी में यहां के बारे में सबकुछ उगल रहा होगा। फिर क्या होगा, इसका तुम स्वयं ही अंदाजा लगा सकते हो। अतः भलाई इसी में है कि मेरे पिता को और हमें तुरन्त आजाद कर दो और यह स्टेशन खाली कर अपने देश वापस भाग जाओ।
खामोश बदतमीज!

क्यों, घबरा गये क्या?
बांगली तुरन्त एजेण्टों को खबर कर भीमा को खत्म करने का प्रबन्ध करो, वरना इस पिद्दी से छोकरे की बात सच हो जायेगी।
अभी लीजिये कामरेड!

तभी एक सैनिक तेजी से चलता हुआ वहां आया।
क्या बात है फूचिंग? क्या कोई नई खबर...?
यस कामरेड, हिंदुस्तान से एजेण्ट जीरो का सन्देश आया है कि भारत में हमारे एक स्थानीय पिट्ठू भीमा ने पुलिस कस्टडी में आत्महत्या कर ली है।

वाह
हा...हा...हा... वास्तव में तुम बड़ी अच्छी खबर लाये।
खुश हो लो सुअरो। जब हमारा दांव चलेगा, तब सारे दांत पेट में घुस जायेंगे।

तुमने भी सुन लिया न छोकरो, जिस मुसीबत से तुम हमें डरा रहे थे, वह अपने आप ही खत्म हो गई। अब तुम्हारे अलावा कोई भी हमारे अड्डे के विषय में नहीं जानता और तुम - हा..हा..हा.. तुम दोनों से मुझे बहुत से पिछले हिसाब-किताब चुकाने हैं, लेकिन अभी नहीं बच्चो, ठीक चौबीस घण्टे बाद।
चलो बांगली।

तुंग और बांगली के नजरों से ओझल हो जाने के बाद—
अब क्या होगा राम भइया। कहीं हमारे मोह से अंकल, फौजी राज इन्हें बता न दें।
नहीं, ऐसा असम्भव है। मैं डैडी के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हूं। वे सर कटा सकते हैं, मगर सर झुका नहीं सकते।

परन्तु फिर भी हमें आजादी के लिए कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा। अंकल के इंकार करने की दशा में भी ये शैतान उनसे फौजी राज जानने के लिये उन पर और जुल्म करने से बाज नहीं आयेंगे। वैसे भी ये अब तक उनकी काफी बुरी गत बना चुके हैं।
तुम ठीक कहते हो। हमें जो कुछ भी करना है, इन्हीं चौबीस घंटे के बीच ही करना है और...

...स्वयं ही करना है, क्योंकि बाहरी मदद की कोई आशा नहीं है।
परन्तु कुछ करने के लिये हमें सबसे पहले इस कोठरी से बाहर निकलना होगा, जो की पहरेदारों के रहते सम्भव नहीं।

हुं। ठहरो, मुझे कोई युक्ति सोचने दो।
ठीक है, तुम भी सोचो और मैं भी अपनी खोपड़ी लड़ाता हूं।
फिर दोनों वहां से निकलने का कोई उपाय सोचने लगे।

शीघ्र ही—
आईडिया! रहीम, मेरे दिमाग में एक बढ़िया उपाय आया है। कान इधर लाओ, जल्दी!
ओह
रहीम तुरन्त राम के निकट हो गया और राम धीरे-धीरे उसके कान में कुछ कहने लगा।

तभी द्वार पर पहरा दे रहे एक पहरेदार की दृष्टि अचानक उनकी ओर घूमी।
ऐ, यह तुम दोनों कान में क्या खुसर-फुसर कर रहे हो। यदि भाग निकलने की कोई योजना बना रहे हो तो बेकार है। बिना कामरेड की इच्छा के यहां कोई भी एक क्षण से ज्यादा सांस नहीं ले सकता।

मैं जानता हूं भाई, लेकिन यह कमीना मुझे यहां से भागने के लिए उकसा कर मरवाना चाहता है... परन्तु अब मैं इसके बहकावे में नहीं आ सकता। इसी के कारण आज मेरी जान पर आ बनी है।
क्या कहा, मेरे कारण! कुत्ते, यह क्यों नहीं कहता कि तेरे कारण मेरी जान पर आ बनी है।

रहीम, क्रोध से राम पर झपटा—
गाली देता है, अब मैं तुझे जिन्दा नहीं छोडूंगा।
धड़ाक्
उफ!
राम की आंखें भी क्रोध से सुलग उठीं—
तेरी यह हिम्मत, मुझ पर हाथ उठाए। ले, चख मजा।
कड़ाक्
आऽऽऽऽ ईऽऽऽ ईऽऽऽ
फिर दोनों बाकायदा किन्हीं भूखे भेड़ियों के समान एक-दूसरे से गुथ गये, जबकि दोनों पहरेदार हैरान थे।
उफ
कड़ाक्
कड़ाक्
आह
पता नहीं अचानक क्या पागलपन सवार हो गया इनके ऊपर?
यह दोनों तो एक-दूसरे की बोटी-बोटी नोचने पर आमादा हैं।
जब काफी मना करने के बावजूद भी राम-रहीम एक-दूसरे से अलग नहीं हुए तो—
कहता हूं बन्द करो यह सब, वरना मैं दोनों को गोली मार दूंगा।
नहीं दोस्त, भूल से भी ऐसा मत कर बैठना, वरना कामरेड हमें कच्चा चबा जायेंगे। कर्नल से फौजी भेद उगलवाने के लिये इन दोनों का जिन्दा रहना बहुत जरूरी है।
ओह! फिर...?
द्वार खोलकर एक को तुम सम्भालो, दूसरे को मैं सम्भालता हूं।
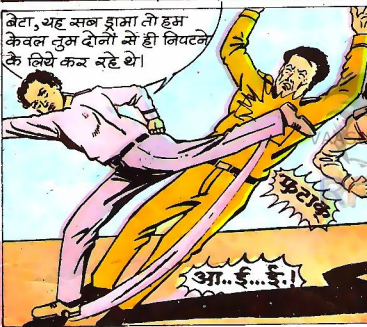
द्वार खोलकर वे दोनों राम-रहीम की ओर बढ़े।
हटो दोनों अलग, वरना अब हमारे हाथों पिटोगे।
और तभी--
कड़ाक
आह!
कड़ाक
आह!
बेटा, यह सब ड्रामा तो हम केवल तुम दोनों से ही निपटने के लिये कर रहे थे।
फटाक
आ..ई...ई..!
बस, यह लात खाओ और बेहोश हो जाओ।
खटाक्
हाए मरा!
अगले ही पल दोनों पहरेदार फर्श पर बेहोश पड़े थे।
गनीमत है कि ये ज्यादा चीखे-चिल्लाये नहीं, वरना सब गड़बड़ हो जाता। चलो अब यहां से निकल चलें।
हां चलो।
फिर दोनों कोठरी से निकलकर उनकी गन उठाते हुये एक तरफ दौड़ पड़े। संयोग वश उस तरफ कोई आदमी नहीं था।

दौड़ते-दौड़ते अचानक राम ने रहीम को एक तरफ आड़ में खींचा।
रुको रहीम!
क्यों, क्या हुआ?
वह देखो, बिजली का जनरेटर। शायद यही इनका पावर स्टेशन है और यहीं से पूरे अड्डे को बिजली सप्लाई की जाती है।

समझ गया! तुम चाहते हो कि इसे नष्ट कर इनका इलैक्ट्रानिक सिस्टम फेल कर दिया जाये।
बिल्कुल ठीक समझे, इससे जहां इनमें बौखलाहट फैलेगी, वहीं हमें अंधकार और इनकी बौखलाहट से फायदा पहुंचेगा, लेकिन वह पहरेदार...!

उसकी तुम चिन्ता मत करो भइया। मेरे पास बेआवाज शस्त्र भी हैं। देखो, मैं कितनी आसानी से उसे लम्बा करता हूं!
अरे—गुलेल!
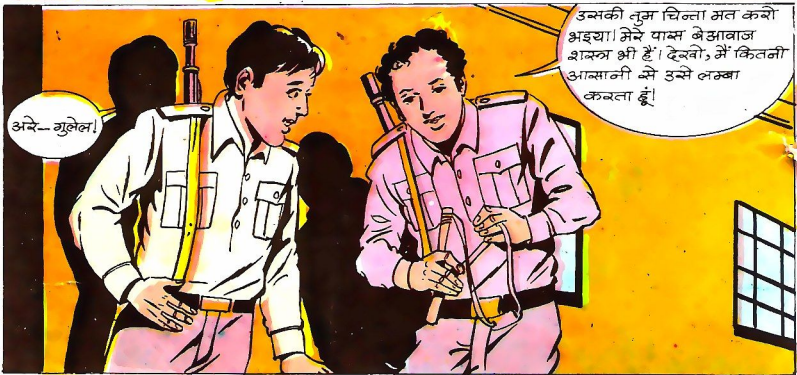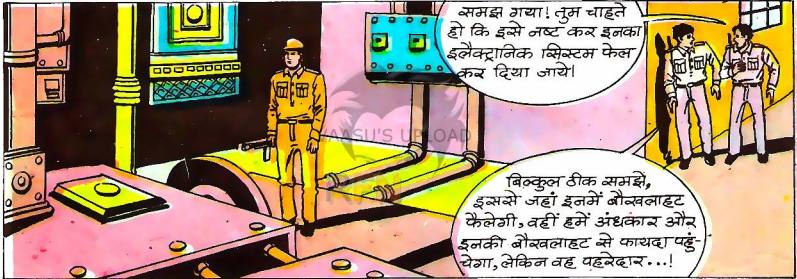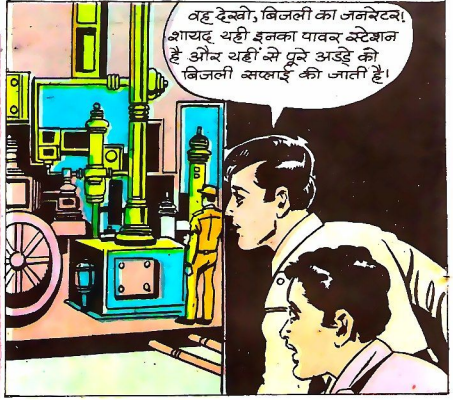
गुलेल निकाल कर रहीम ने उसमें एक कंचा फिट किया फिर पहरेदार सैनिक पर निशाना साधने लगा।
वाह! गुलेल साथ लाकर तुमने वास्तव में अकलमंदी का काम किया है रहीम!
अगले ही पल--
आह!
पहारेदार के धरती पर लुढ़कते ही राम-रहीम दौड़कर वहां पहुंच गये और गनों के कुन्दे से मशीनों और जनरेटर को तोड़ने-फोड़ने लगे।
कड़ाक्
खटाक्
अचानक ही जब बिजली गुल हुई-
कहीं पावर स्टेशन में कोई गड़बड़ तो नहीं हुई। जाओ देखो कोई खराबी आई हो तो जल्दी मैकेनिक से ठीक कराओ।
ओ.के. कामरेड!
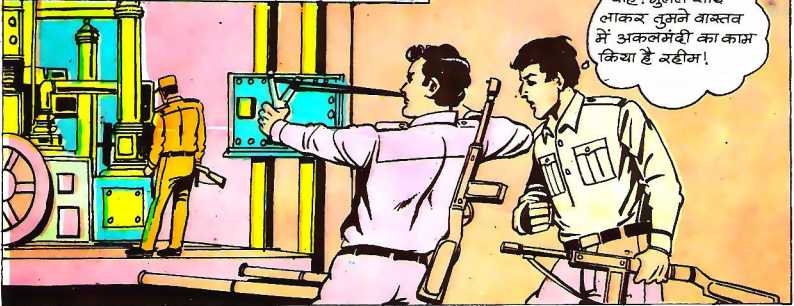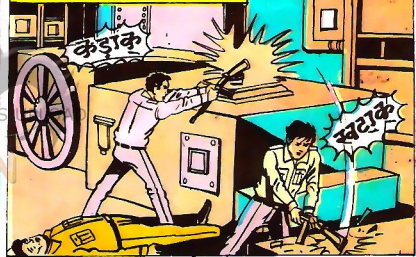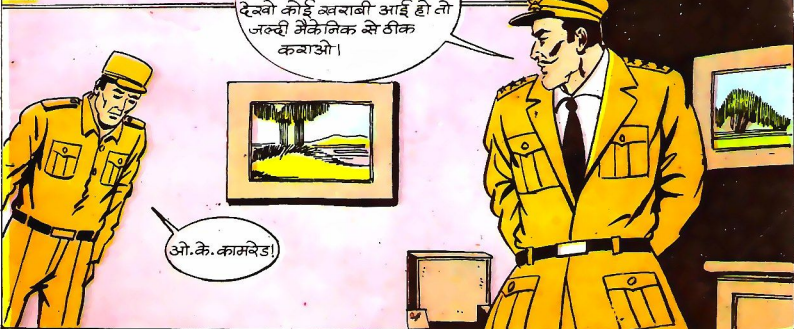
उधर राम-रहीम पावर स्टेशन को पूरी तरह नष्ट करने के पश्चात् अंधकार का लाभ उठाते हुए तेजी से एक तरफ बढ़े जा रहे थे कि सहसा-

सावधान रहीम, कुछ लोग इसी ओर आ रहे हैं।

खट् खट् खट्

हां, चलो उस कोठरी में दुबकें।

और दोनों लपक कर उस कोठरी के भीतर पहुंच गये।

शीघ्र ही कुछ सैनिकों के साये उनके सामने से होकर आगे निकलते चले गये।
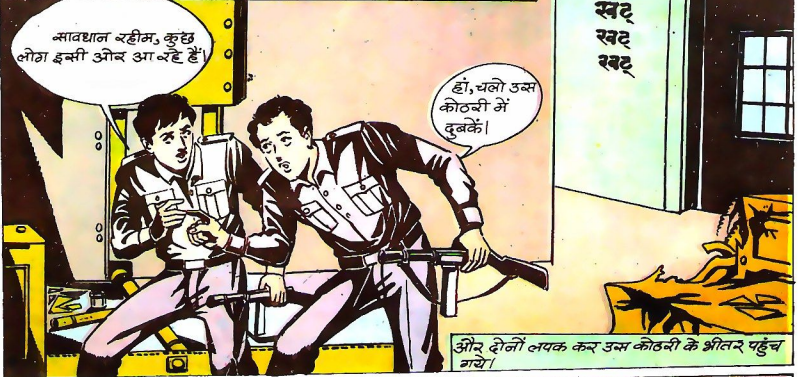
इधर जब वे सैनिक अपने पावर स्टेशन के निकट पहुंचे–
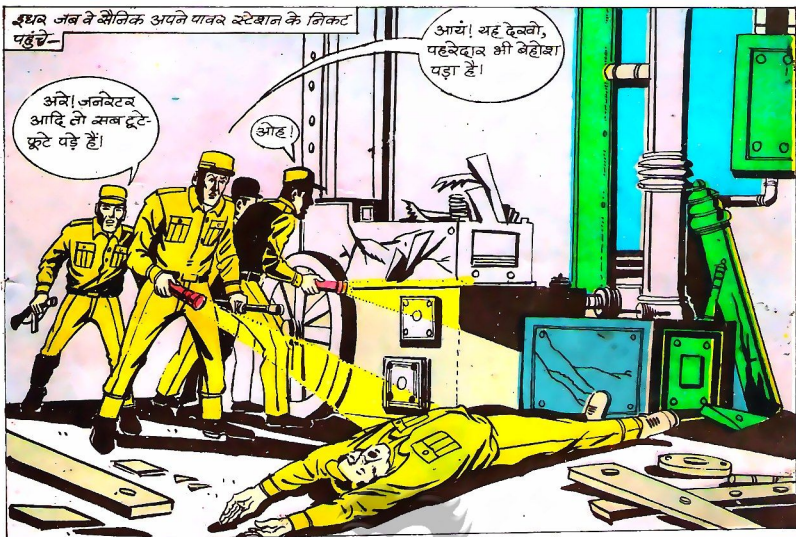
अरे! जनरेटर आदि तो सब टूटे-फूटे पड़े हैं।

ओह!

आयं! यह देखो, पहरेदार भी बेहोश पड़ा है।

शीघ्र ही—
गजब! पहरेदार नहीं हैं और कोठरी का द्वार खुला हुआ है!
भीतर देखो।

वह देखो।
ओह! वे सोए हुये मालूम पड़ते हैं। चादर हटाकर देखो।

और जैसे ही एक ने आगे बढ़कर दोनों के ऊपर से चादर हटाई।
अरे! ये तो वही दोनों पहरेदार हैं, जिन्हें उन हिंदुस्तानी छोकरों की पहरेदारी पर नियुक्त किया गया था।
हुम्म! अब साफ हो गया कि यह सब किया-धरा उन्हीं शैतान छोकरों का है। वे किसी प्रकार इन्हें अपना शिकार बना यहां से निकल भागे हैं।

सुनो, तुम तुरन्त जाकर कामरेड को सारी स्थिति से अवगत कराओ और तुम खतरे का सायरन बजा दो।
ओ.के.
बहुत अच्छा।
कहने के साथ ही दोनों पलटकर तेजी के साथ बाहर निकल गये।

उनके जाने के बाद बाकी भी कोठरी से निकलकर एक तरफ दौड़ पड़े।
ध्यान रहे, उन छोकरों को जिन्दा ही पकड़ने की कोशिश करनी है, वरना कामरेड की सारी योजना गड़बड़ हो जायेगी।
समझ गये!
शीघ्र ही खतरे का सायरन बज उठा।
पी...पी...पी...
ओह! लगता है हमारे भागने की खबर उन्हें लग चुकी है।
उधर खतरे का सायरन बजते ही पूरे अड्डे में खलबली-सी मच गयी!
कोई खतरा मालूम पड़ता है। अपने हथियार सम्भाल लो जल्दी।
इधर
अब क्या करें भइया? पता नहीं अंकल कहां होंगे? कहीं...।
हिम्मत खोने से काम नहीं चलेगा रहीम। डैडी का पता लगाने के लिये हमें यहां के किसी आदमी को काबू में करना चाहिये।
लेकिन
अभी रहीम ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला ही था कि...
...एक तरफ से दौड़ते कदमों की आहट सुनकर खामोश हो गया।
खट
खट
खट
वे इधर ही आ रहे हैं। किसी एक को जिन्दा पकड़ने की कोशिश करेंगे, लेकिन स्थितिनुसार। आओ आड़ में चलते हैं।
ठीक है!
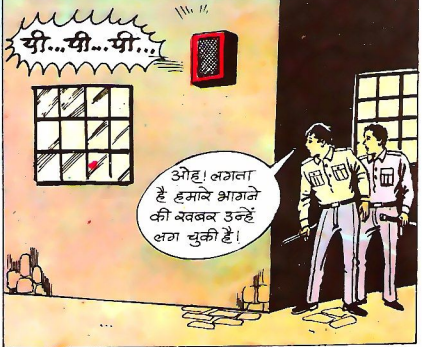
उधर खतरे के सायरन के बजने के साथ-साथ जब कामरेड टुंगा को राम-रहीम के कोठरी से भाग निकलने की खबर लगी--
हरामजादो, खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो। जाओ, और उन्हें हर कीमत पर जिन्दा पकड़ने की कोशिश करो, वरना एक-एक को जलती भट्टी में भुनवा दूंगा।
जब सभी सैनिक कमरे से बाहर निकल गये--
कम्बख्त, यहां भी अपनी शैतानी हरकतों से बाज नहीं आये। खैर, कोई बात नहीं। वे अपने बाप तक अवश्य पहुंचने की चेष्टा करेंगे। अब वहीं पहुंचकर मुझे उनके स्वागत की तैयारी करनी चाहिये।
इधर राम-रहीम के उस आड़ तक पहुंचने से पूर्व ही उस तरफ आते सैनिकों की दृष्टि उन पर पड़ गयी।
वे रहे।
रुक जाओ, वरना गोली मार देंगे।
अब सोचने-समझने का कोई मौका न था। दोनों बिजली की-सी फुर्ती के साथ पल्टे और --
एक भी जिन्दा न बचे रहीम।
आ..ई..ई...!
तड़..तड़..तड़
रेट..रेट..रेट..
उफ!

और जब दोनों ने फायरिंग बन्द की—
ये सब तो निपट गये, लेकिन फायरिंग की आवाज सुनकर अन्य सैनिक भी यहां पहुंचते ही होंगे।
उस तरफ चलते हैं, जो होगा देखा जायेगा।
राम-रहीम का विचार ठीक ही था। फायरिंग की आवाज ने उन्हें तलाश करते कुछ सैनिकों को भी चौंका दिया था।
ओह! फायरिंग की आवाज बारूद खाने की ओर से आई है। शायद वे छोकरे उसी तरफ हैं, चलो जल्दी!

इधर राम-रहीम तेजी के साथ एक दूसरे गलियारे में बढ़े चले जा रहे थे कि तभी एक बार फिर वे एक तरफ से आते भारी कदमों की आवाज सुनकर चौंक उठे।
खट् खट् खट्
ओह! फिर कुछ सैनिक इसी ओर आ रहे मालूम पड़ते हैं।
राम भइया! वह देखो, शायद कोई बड़ी कोठरी है! क्यों न वहीं से इनसे मोर्चा लिया जाए!
हां, इसके सिवाए फिलहाल कोई चारा नहीं। चलो!

और दोनों शीघ्रता से उस कोठरी के भीतर प्रविष्ट हो गये।
शुक्र है। यहां भी कोई नहीं है।
खट खट खट
शायद यहां के पहरेदार भी हमें ढूंढने में कहीं जुटे होंगे, लेकिन अब खामोश रहो, वे निकट आ पहुंचे हैं।

जूतों की आवाजें ठीक उस कोठरी के सामने आकर रुक गयीं। राम और रहीम ने अपनी सांसें तक रोक लीं। तभी एक भारी आवाज उनके कानों में पड़ी।
तुम लोग उस तरफ देखो और तुम उस तरफ। मैं इधर देखता हूं।

तुरन्त ही कुछ कदमों की आहट दूर होती चली गई।
लगता है सभी यहां से हट गये हैं। आओ बाहर निकलें।
ठहरो, मेरे विचार से एक अभी बाहर है। थोड़ा इंतजार करो।
राम ने तुरन्त रहीम को पीछे की ओर खींचते हुए कहा था।

परन्तु यहीं गड़बड़ हुई। राम ने रहीम को जैसे ही पीछे की ओर खींचा, रहीम किसी वस्तु से टकराकर फर्श पर गिर पड़ा।
खड़
खड़ाक
उफ!

तुरन्त बाहर से आवाज आई—
कौन...कौन है भीतर?
हो गई गड़बड़। जल्दी उठो रहीम।
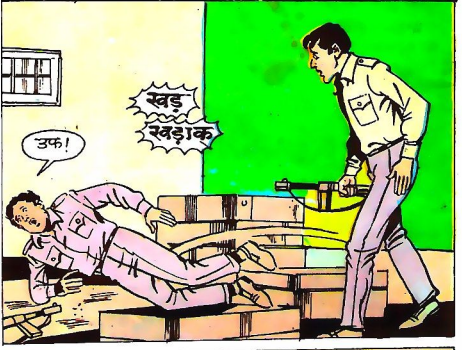
लेकिन इससे पहले कि रहीम उठकर खड़ा हो पाता, बाहर खड़े सैनिक ने भीतर प्रवेश किया।
ओह! तो तुम दोनों यहां छिपे हो।

परन्तु इससे पहले कि वह सैनिक अपनी गन का इस्तेमाल कर पाता राम ने बिजली की-सी तेजी के साथ उसके ऊपर छलांग लगा दी।
उफ
धड़ाक-
वो मारा शाबाश!

सैनिक उछलकर वहां रखी लकड़ियों की पेटियों पर जा गिरा। फिर इससे पहले कि वह सम्भल पाता—
खबरदार, अब हिलने की भी कोशिश मत करना, वरना...
...वरना भारत के बेटे दुश्मनों पर जरा भी रहम नहीं खायेंगे।

बेचारा सैनिक भय से थूक सटकने लगा।
घबराओ नहीं, अगर तुम हमारे दो प्रश्नों का उत्तर दो तो तुम्हारी जान बच सकती है।
म...मैं तैयार हूं। पूछो, क्या पूछना चाहते हो?

कर्नल राघव को कहां रखा गया है और यहां का बारूद खाना कहां पर बनाया गया है?
ब...बारूद खाना यही है और कर्नल को यहां से दो गलियारे छोड़कर तेरह नम्बर टार्चर वाली कोठरी में रखा गया है।

परन्तु मुझे विश्वास है कि तुम उस समय तक दम तोड़ चुके होगे कमीने।
खामोश बेवकूफ इन्सान...

परन्तु इससे पहले कि तुंग अपना वाक्य पूरा कर पाता, बाहर एक भयानक विस्फोट हुआ।
धड़ाम्
ओह! यह धमाका कैसा? खड़े क्यों हो सुअरो, जाकर देखो।

हड़बड़ाते सैनिक बाहर निकले, परन्तु इससे पहले कि वे धमाके का कारण जान पाते, एक तरफ से गोलियों की बौछार आयी।
उफ!
आ...ई...ई...!
तड़..तड़..तड़
आह!

गोलियों की बौछार करने वाले राम-रहीम ही थे।
न...ह...हीं... मुझे म...त मारो!
सब खत्म हो गये, केवल यही हमारा कैदी बचा है। मेरे विचार से हमें इसे भी तुरन्त खत्म कर देना चाहिये। वैसे भी यह अपना काम पूरा कर चुका है।

परन्तु तब तक राम के हाथ हरकत में आ चुके थे।
खटाक
आह!

राम के एक ही वार से वह सैनिक बेहोश होकर फर्श पर लुढ़क गया।
रहीम, मैं पहले भीतर घुसता हूं, तुम मेरे पीछे आना।
ठीक है, लेकिन सावधान रहना भइया।

राम भीतर प्रविष्ट हुआ, लेकिन भीतर का दृश्य देखकर वह कांप उठा।
आओ–आओ बच्चे, मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। हा... हा... हा...।
डै... डी...!

अगले ही पल राम किसी घायल सिंह के समान दहाड़ उठा।
कमीने शैतान! तुरन्त मेरे डैडी को खोल दे, वरना मैं तेरा जिस्म छलनी- छलनी कर दूंगा।
हा... हा... हा... जरूर–जरूर

...बांगली, कर दो आजाद इसके बाप को। हम किसी और से उन गुप्त फौजी अड्डों का राज मालूम कर लेंगे।
ओ.के कामरेड!

कहने के साथ ही बांगली ने उस रस्सी का निशाना लिया, जिससे कर्नल राघव लटके थे और...
धांय–धांय
न...हीऽऽऽ!

गोलियां रस्सी से टकराईं और रस्सी कट गई। कर्नल राघव जलती भट्टी में गिरने लगे।
हा...हा...हा...
उफ!

परन्तु इससे पूर्व कि कर्नल राघव धधकती भट्टी में गिरकर राख हो जाते, राम ने अपने स्थान से एक लम्बी उछाल भरी।

और अपने डैडी को लिये भट्टी के दूसरी ओर फर्श पर जा गिरा।
फायर– भून डालो दोनों को।

परन्तु इससे पहले कि बांगली कर्नल राघव और राम पर फायर कर पाता, रहीम साक्षात यमदूत के समान भीतर दाखिल हुआ।
तड़...तड़...तड़
आ...ई...ई..
हाय!

पलक झपकने के साथ ही तुंग और बांगली की जीवन-लीला समाप्त हो गई।
भइया, अब देर न करो। अंकल के हाथ-पैर खोलो और निकल चलो यहां से। यदि और सैनिक यहां आ गए तो मुश्किल हो जायेगी।
वाह! मेरे बहादुर बच्चो।
शाबाश रहीम! बिल्कुल ठीक मौके पर आये।
अभी लो।

राम ने झटपट कर्नल राघव के बंधन खोले।
चलिये डैडी, अब यहां से निकल चलें। हमें जल्द-से-जल्द इस अड्डे से बाहर पहुंचना है।
नहीं बेटे, तुम दोनों यहां से निकल जाओ। मैं एक फौजी हूं। दुश्मनों को समाप्त किये बिना यहां से नहीं जाऊंगा।

दुश्मन और इस अड्डे की चिन्ता आप छोड़ दें डैडी। इन सब का प्रबन्ध हम पहले ही कर चुके हैं।
हां अंकल, हमने इनके पूरे अड्डे में शक्तिशाली टाईम बम फिट कर दिये हैं, जो अब से ठीक बीस मिनट बाद फटेंगे।
ओह, यह बात है, तब चलो।

फिर तीनों उस कमरे से निकलकर उस तरफ दौड़ पड़े, जहां ऊपर जाने और नीचे आने का सीढ़ियों वाला गुप्त मार्ग था।
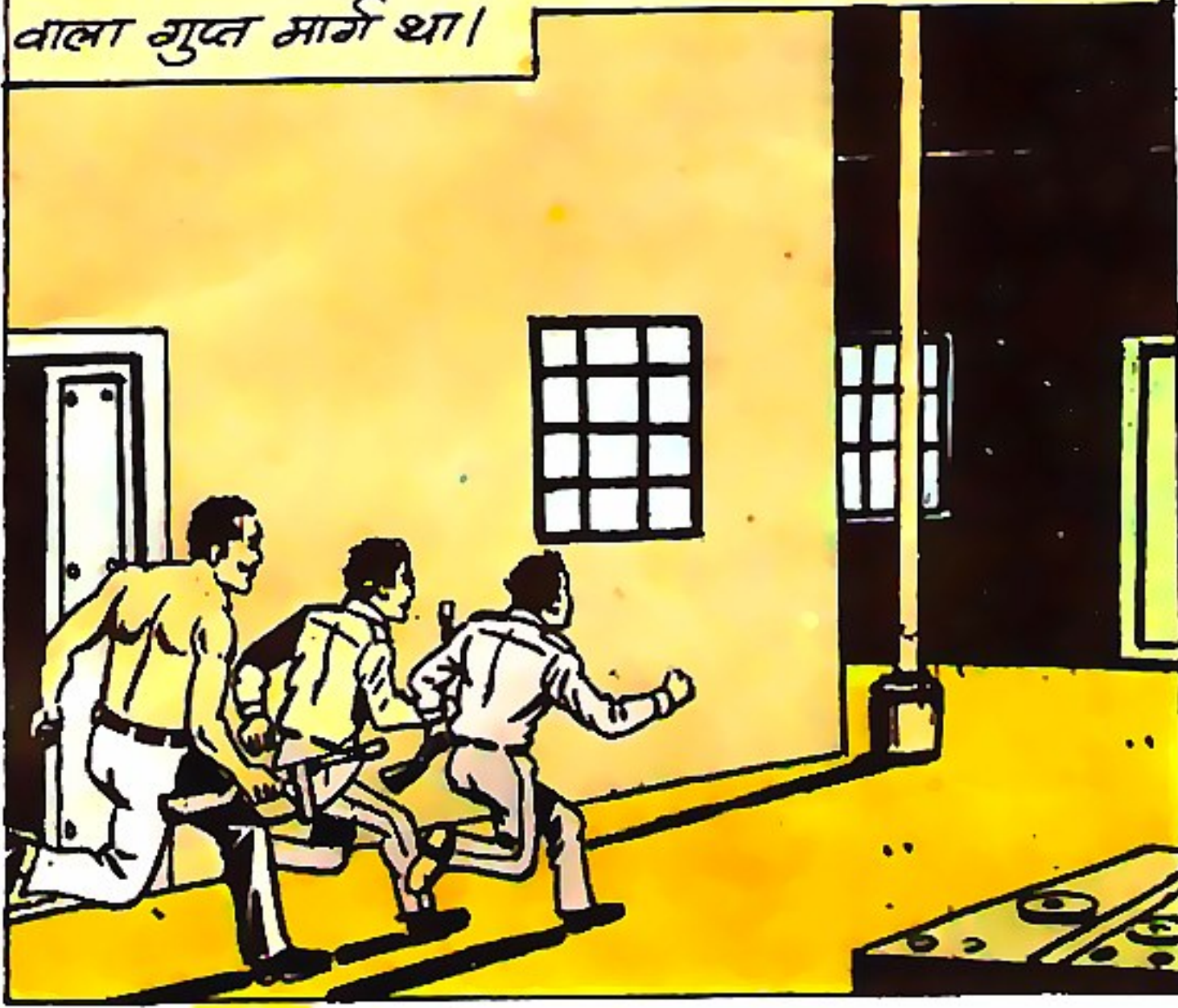
मार्ग में उन्हें दुश्मनों ने रोकने की भरसक कोशिश की...
वे रहे। मार डालो उन्हें।

...लेकिन उनकी गनों से निकली गोलियों ने...
तड़...तड़...तड़..
आ..ई..ई...
हाय!

...और हाथों से छूटे दस्ती बमों ने...
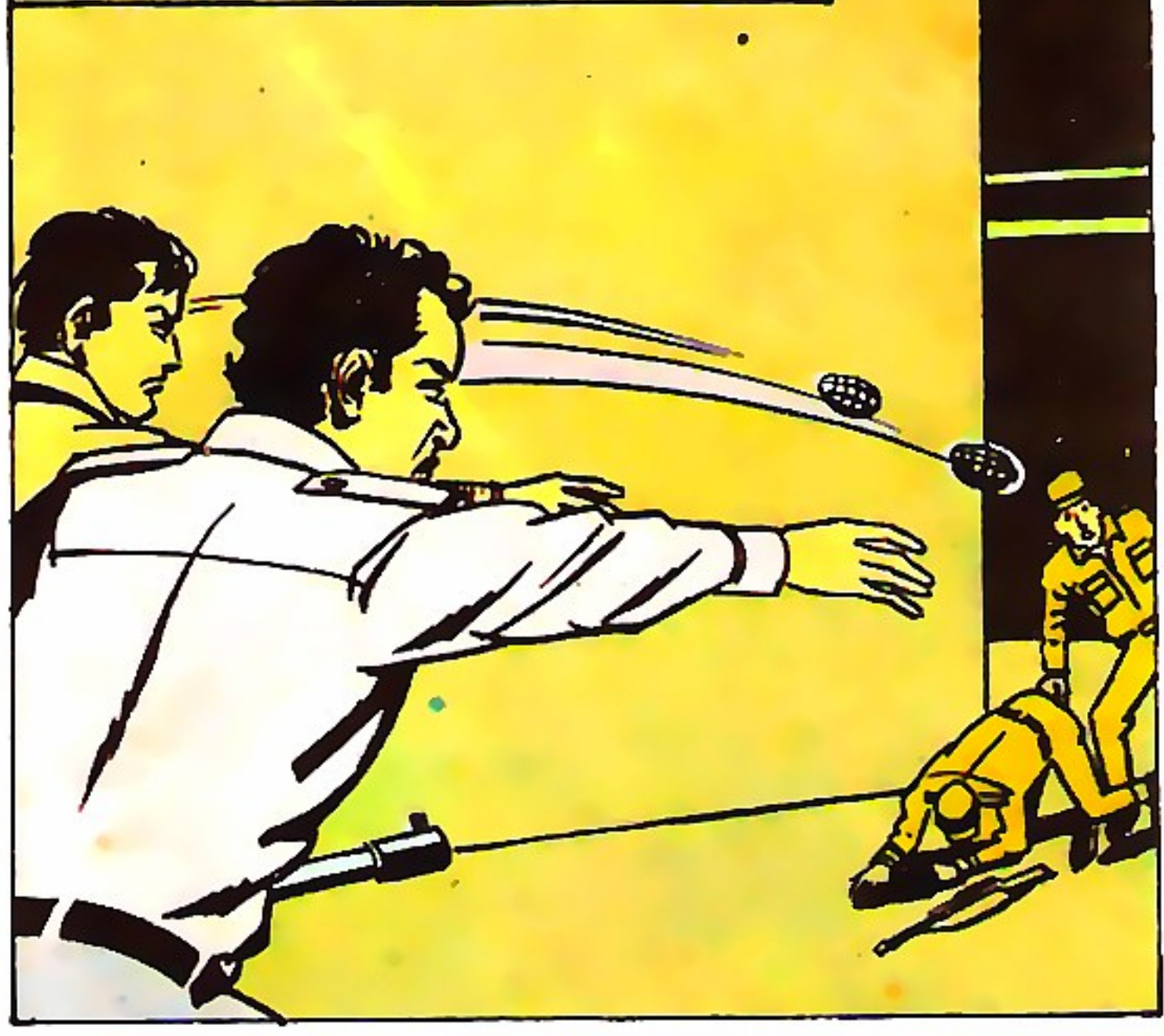
... उन्हें लाशों के ढेर में बदल...
धड़ाम
आह!
उफ!
धुड़म--

...उनका मार्ग साफ कर दिया और कुछ ही देर बाद वे गुप्त सीढ़ियों तक पहुंचने में सफल हो गये।
जल्दी चढ़ो— बम फटने में अब केवल दस मिनट शेष हैं।
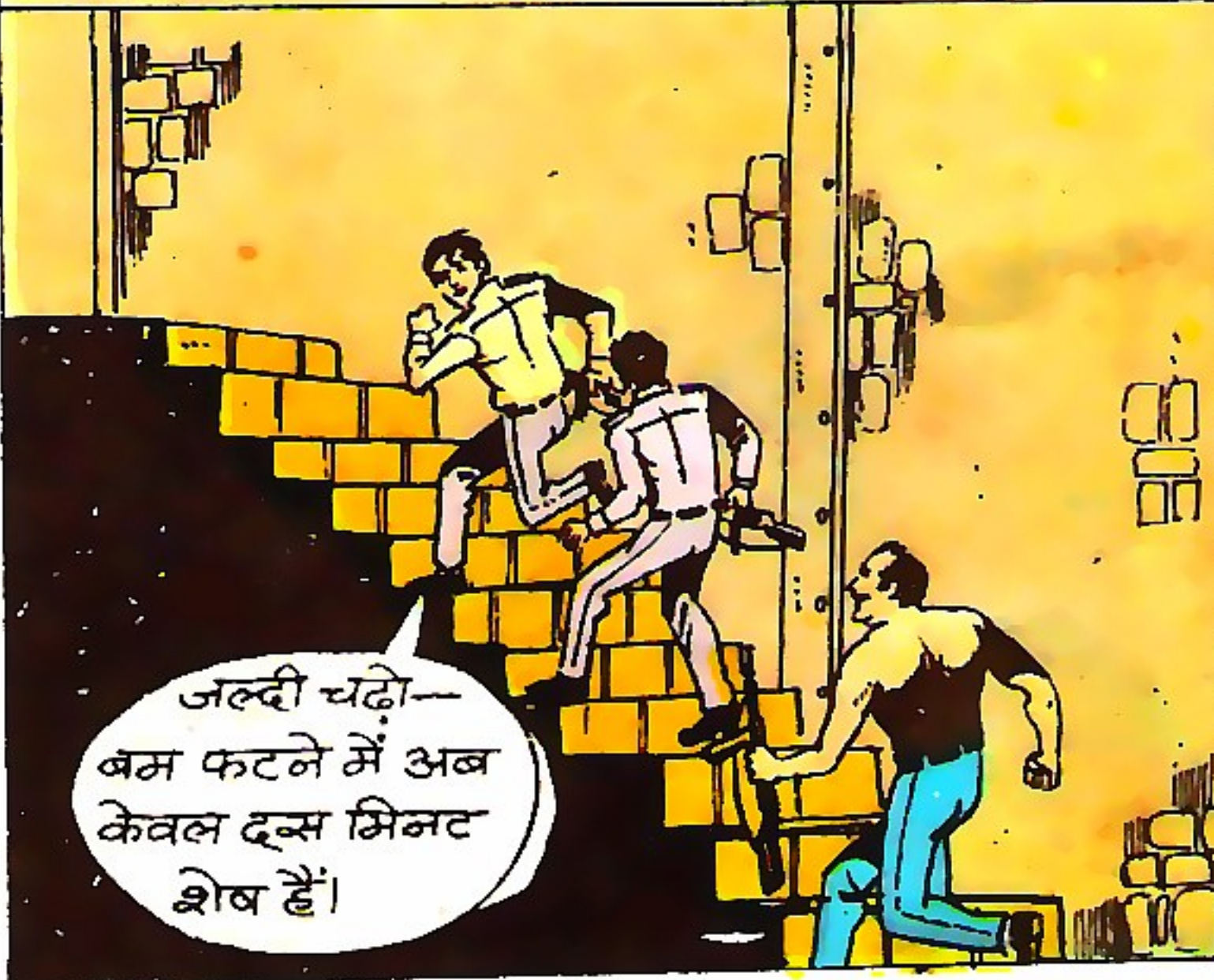
शीघ्र ही—
वैसे उतरने का समय नहीं, मेरे विचार से हमें पानी में कूद जाना चाहिए।
ठीक कहते हो बेटे, चलो कूद जाओ।

और अगले ही पल—

पानी की सतह पर पहुंचने के बाद—
डैडी, आप और रहीम स्टीमर पर पहुंचिये, मैं चट्टान से जंजीर हटाता हूं। जल्दी, केवल तीन मिनट ही शेष रह गये हैं। उसके बाद यह पहाड़ ज्वालामुखी पर्वत के समान फट पड़ेगा।

कर्नल राघव और रहीम स्टीमर पर पहुंच गये और राम जल्दी से स्टीमर से बंधी जंजीर को चट्टान से अलग करने लगा।

फिर जैसे ही राम चट्टान से जंजीर खोल स्टीमर में पहुंचा, रहीम ने इंजन स्टार्ट कर उसे तीव्र गति से पहाड़ की विपरीत दिशा में दौड़ा दिया।
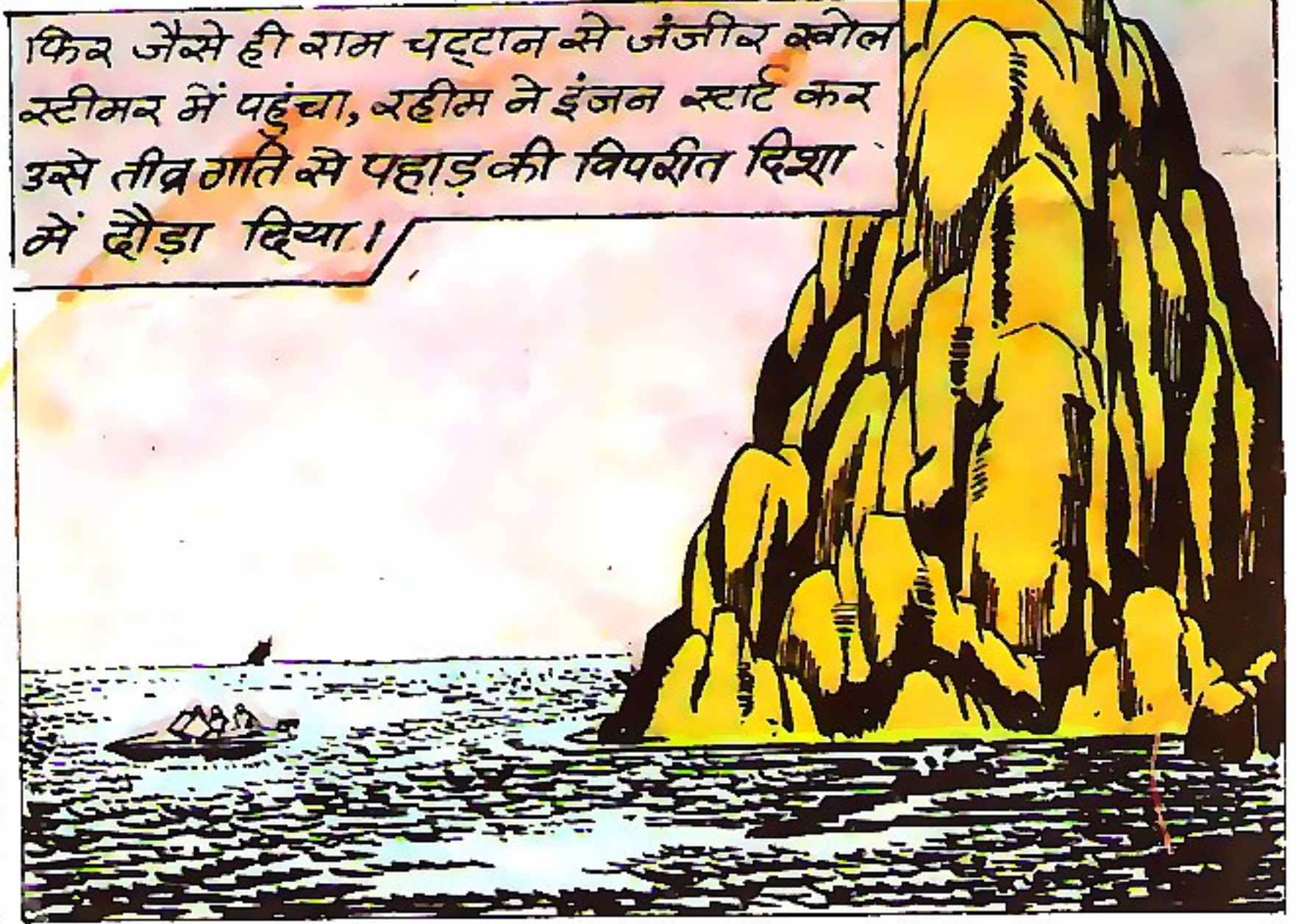
लेकिन अभी स्टीमर उस पहाड़ से कुछ ही दूर पहुंचा था कि तभी—
गुड़म
गुड़म
धड़ाम्

आखिर हमारे तिरंगे के दुश्मनों की कब्र उन्हीं के खूनी स्टेशन में बन गयी।
मुझे तुम पर गर्व है मेरे बहादुर बच्चो!
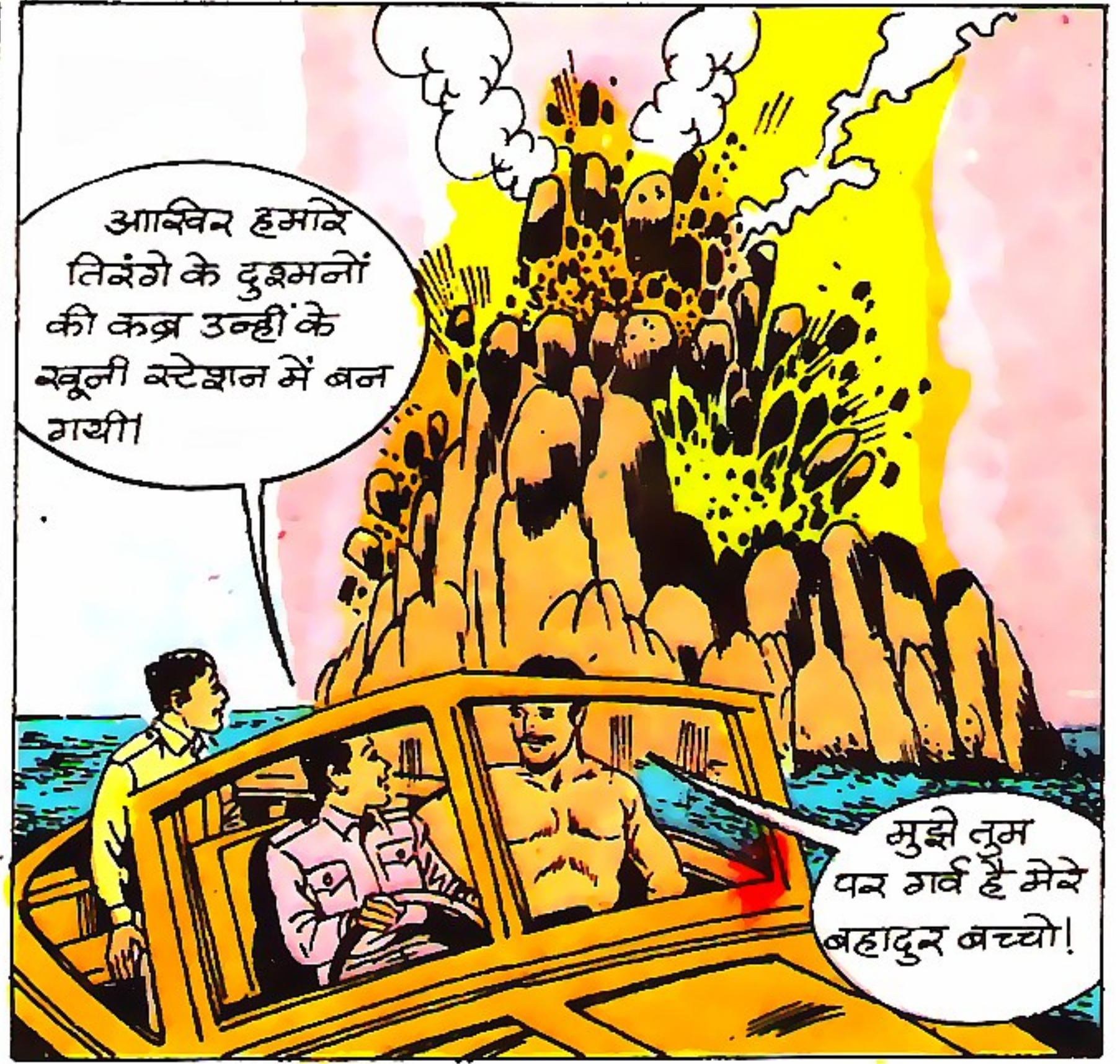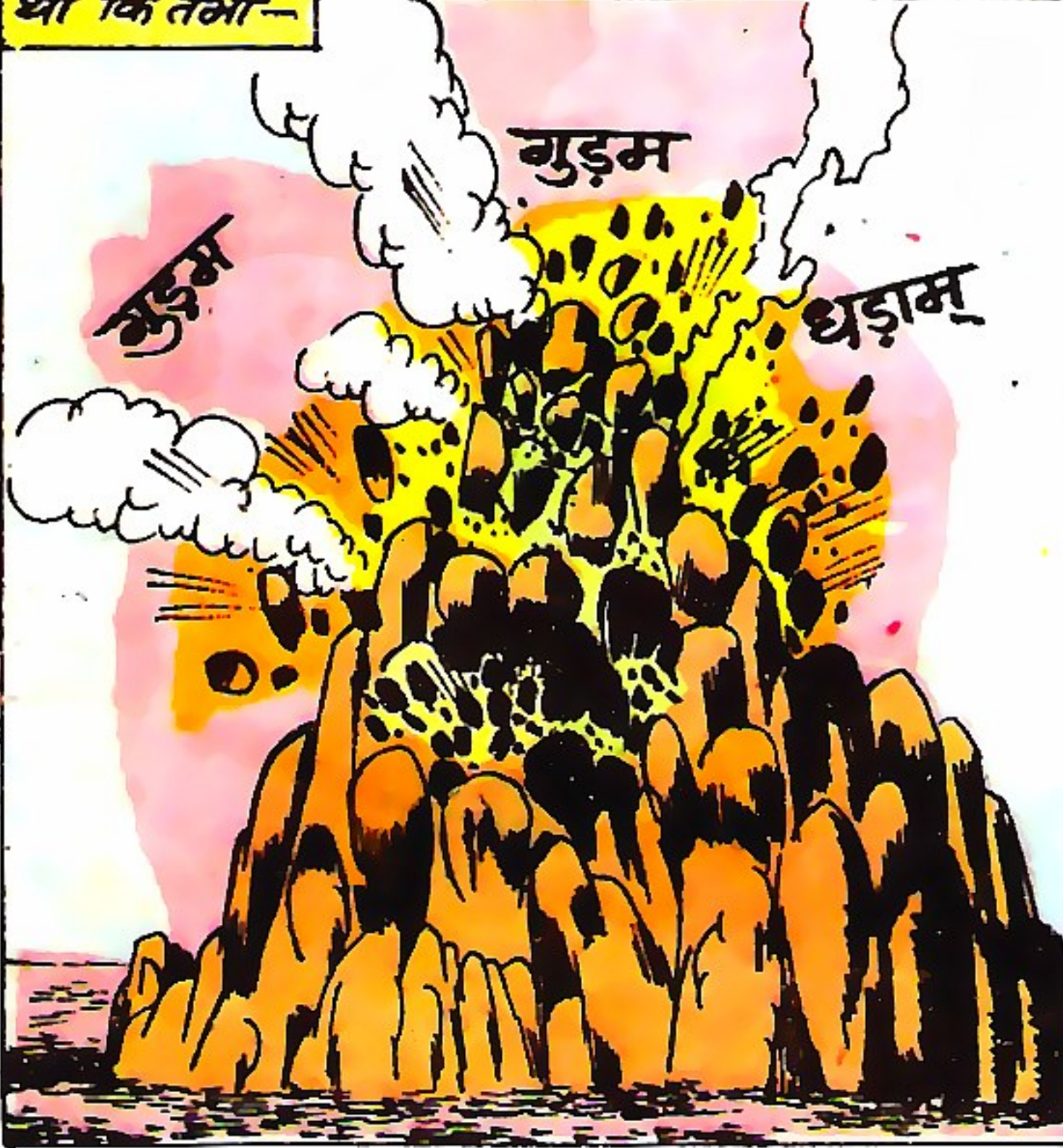
तभी उन्हें चारों तरफ से नेवी के बड़े-बड़े जहाज आते दिखाई दिये।
ओह! ये तो हमारे देश के लड़ाकू जहाज हैं, और शायद पहाड़ की ओर ही जा रहे हैं। कहीं इन्हें भी चीनी अड्डे के बारे में तो पता नहीं चल गया।
हो सकता है।
लेकिन उन्होंने उन जहाजों से सम्पर्क करने की कोई चेष्टा नहीं की और निरन्तर तट की ओर बढ़ते रहे।
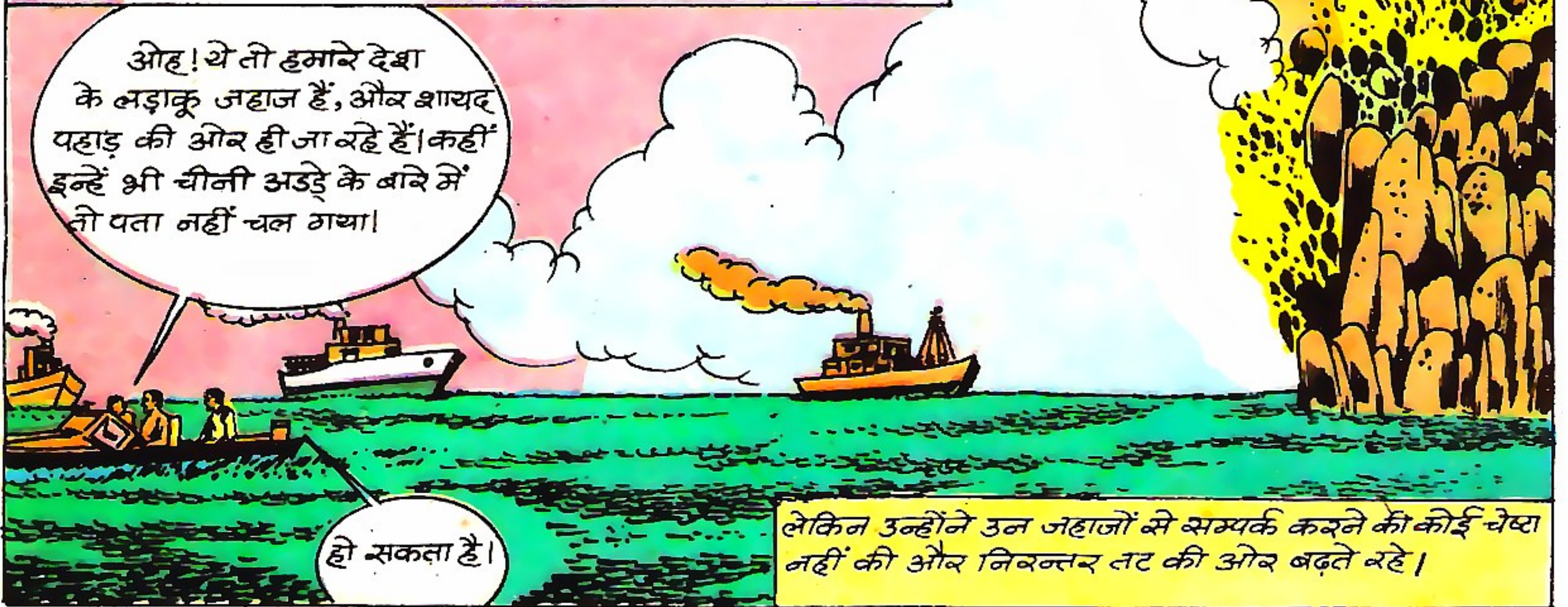
परन्तु तट पर पहुंचते ही चीफ मुखर्जी व अन्य उच्चाधिकारियों को अपने स्वागत में खड़े देख उनकी आंखें आश्चर्य से फैल गयीं।
ओह! मि. मुखर्जी
अरे अंकल!
आओ मेरे बहादुर बच्चो! पूरे देश की ओर से हम तुम्हारा स्वागत करते हैं।

और चीफ मुखर्जी ने आगे बढ़कर राम-रहीम को गले से लगा लिया।
मुझे तुम दोनों पर गर्व है मेरे बच्चो। सच, तुम जैसे भारत के बेटों के रहते हमारे पवित्र तिरंगे पर कभी आंच नहीं आ सकती।

PRINTED BY GOYAL OFFSET WORKS PH. 7211408